और देवी दास आइया, और आए भगवान ।
सिद्धपुर पाटन से, दामोदर परवान ॥८४॥

देवीदास और भगवान दास आत्म ज्ञान की चर्चा सुन कर श्री जी के चरणों में समर्पित हुए और सिद्धपुर पाटन से दामोदर भाई यहां आए ।

और तिवारी उदई, थी लौकिक पहिचान ।
श्री राज को घरों पधराए के, रसोई कराई प्रमान ॥८५॥

उदई तिवारी को श्री जी का फकीरी भेष देखकर श्रद्धा उत्पन्न हो गई । श्री जी को सुन्दर साथ सहित अपने घर पधराया और रसोई उच्छव किया ।

चांद खान आइया, चरचा सुनने को ।
दौड़ता ईमान को, रहा रामनगर मों ॥८६॥

श्री जी की चर्चा सुनने के लिए चांद खान आते थे । श्री जी के स्वरूप की पहचान करने के लिए बहुत प्रयत्न किया और वह रामनगर में ही रहने लग गया ।

महामत कहें ऐ मोमिनों, ए कही रामनगर की तुम ।
और आगे अजूं बहुत, कहों हक के हुकम ॥८७॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फरमाते हैं कि - हे सुन्दरसाथ जी ! यह रामनगर की कुछ बीतक आपसे कही है । अभी कुछ और बाकी है वह भी आपसे कहते हैं ।

(प्रकरण ५७; चौपाई ३१५७)

ए बात हरिसिंह सुनी, करने आया दीदार ।
सुजान साह की सोहोबत, किया सूरत सिंह खबरदार ॥१॥

सूरतसिंह ने सुजान शाह को श्री जी के राम नगर में आने की पहचान करा कर सावचेत किया । यह बात सुनकर हरिसिंह सुजान सिंह के साथ दर्शन करने आए ।

सुनी चरचा आए के, बोहोत हुआ खुसाल ।
घरों जाए न्योता किया, खबर पोहोंचाई हाल ॥२॥

वे श्री जी के मुखारबिन्द की चर्चा सुनकर बड़े प्रसन्न हुए । घर वापिस पहुंचकर उन्होंने स्वामी जी और सब सुंदरसाथ को रसोई का निमंत्रण देने का विचार किया और आकर चरणों में प्रार्थना की ।

Nijanand App

तुम मेरे घर पधारो, मैं सेवा करों तुम ।
बात उनकी सुन के, भया उसे हुकम ॥३॥

आप मेरे घर आने की कृपा कीजिए । मैं आपकी सेवा करने की चाहना रखता हूं । श्री जी ने उसका भाव भीना निमत्रण स्वीकार कर उसको घर जाकर प्रबन्ध करने का आदेश दिया ।

हम आवेंगे तुम्हारे, जाए रसोई करो तैयार ।
उनका भाव देख के, बातें करी मुनहार ॥४॥

आप घर जाकर रसोई का प्रबंध कीजिए । हम अवश्य आपके घर आएंगे । हरिसिंह का भक्ति भाव देखकर श्री जी ने उसके साथ प्रेम भरी बातें की ।

रोज दूसरे उनने, बुलाए अपनें घर ।
बड़ी बैठक करके, पधराए बिछौनों पर ॥५॥

दूसरे दिन उसने श्री जी को अपने घर बुलाया और बहुत अच्छा आसन बिछाकर श्री जी की पधरावनी की ।

सब साथ आए पोहोंचे, बैठाई चौकी पर ।
आप धोती पेहेन के, रह्या प्रीसने पर ॥६॥

आने वाले सब सुन्दरसाथ को चौकियों पर बैठाया और खुद धोती पहनकर परोसने की सेवा करने लगा ।

जुगतें बैठाए श्री राज को, भली बैठक ऊपर ।
साथ बैठा देाए पगथिए, करें सेवा दिल धर ॥७॥

धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी को ऊंचे आसन पर बैठाया । सुन्दरसाथ दो पंक्तियों में विराजमान हुए। हरिसिंह अपना सौभाग्य मान कर दिल से सेवा करने लगा ।

पातर लगे प्रीसने, आप ऊपर ढोले बाए ।
जुगते अंन जो प्रीसही, सब सामा पोहोंचाए ॥८॥

सबसे पहले पत्तल परोसे गए । हरिसिंह स्वामी जी को पंखे से हवा करने लगा । उसके साथी हर प्रकार के भोजन की सामग्री ला-ला कर परोसने लगे ।

Nijanand App

ऊपरा ऊपर प्रीसही, मेवा मिठाई पकवान ।
कई जुगते अथानें, थी ऊपर की पहिचान ॥९॥

मेवा, मिठाई, पकवान आदि एक के बाद एक बारी-बारी परोसे गए । अनेक प्रकार के अचार एवं स्वादिष्ट भोजन परोसे गए । हरिसिंह ने श्री जी की बाहरी वेशभूषा देख कर बहुत ऊंचे साधु मान कर उनकी सेवा की ।

श्री राज आरोगे साथ सब, हुए है त्रिपत ।
ऊपर बीड़ी तम्बोल की, ले आगे धरी इत ॥१०॥

स्वामी जी और सब सुन्दरसाथ जब भोजन करके तृप्त हुए । उसके पश्चात् पान बीड़ी सेवा में अर्पित की ।

ले गए अटारी पर, श्री राज को एक ठौर ।
तहां बैठ बिनती करी, हाव-भाव अत जोर ॥११॥

हरिसिंह श्री जी को एकांत में चौबारे पर ले गया । वहां बैठ कर उसने बहुत प्रेम भाव से आतुरता का भाव दिखाते हुए प्रार्थना की ।

मैं तुम्हारा दास हूं, मुझ पर करी मेहेनत ।
मैं उदास हुआ इतसें, ए होए मुझसे जेर इत ॥१२॥

मैं तो आपका ही सेवक हूं । आपने मेरे घर पधारने का कष्ट करके बहुत उपकार किया । मैं संसार के कष्टों से तंग आ गया हूं । आप ऐसी कृपा कीजिए कि यह माया मेरे आधीन हो जाए ।

हुकम हुआ तिनसे, तेरा कारज होए सिध ।
एह बात अंकूर की, आवे न जाग्रत बुध ॥१३॥

श्री जी साहिब ने आशीर्वाद देते हुए कहा कि जाओ ! तुम्हारी मनोकामना पूर्ण होगी । आत्म जागृति तो अंकूर के सम्बन्ध से होती है । यदि परमधाम की निसबत ना हो तो जागृत बुध भी नहीं आती ।

जेता था उनका हिस्सा, तेता लिया उन सुख ।
बिदा होए चला दरबार को, तब पड़ा कसाला दुख ॥१४॥

हरीसिंह के भाग्य में जितना सुख लिखा था, वह श्री जी की सेवा से उतना ही सुख ले सका । यहां से विदा होकर जब वह दरबार के लिए चला तो उसे घोर संकटों का सामना करना पड़ा ।

Nijanand App

और किसोरी कुंवर नें, एह बात सुनी कान ।
तब ऊपर की पहिचान से, ले आया ईमान ॥१५॥

कुंवर किशोरी सिंह को यह समाचार मिला कि श्री जी रामनगर में आ गए हैं और आत्म तत्व की चर्चा करते हैं । एक महान सन्त समझ कर श्री जी के चरणों में समर्पित हुआ और तारतम लेकर सुन्दर साथ में शामिल हो गया ।

अन्दर उनके महल में, केतेक ल्याई ईमान ।
पर बंध दज्जाल के, सो कर न सके पहिचान ॥१६॥

उनके महल में रहने वाले उनके परिवार के अनेक सदस्यों के दिलों में भी श्री जी के प्रति ईमान आ गया लेकिन लोग मर्यादा के मोह बन्धन में पड़े रहने के कारण श्री जी से आत्म सम्बन्ध नहीं जोड़ पाए। इसलिए श्री जी की पूरी पहचान नहीं कर सके ।

किसोर सिंह ने अपना, न्योता पठवाए दिया ।
पधरावें हम राज को, चित्त को चौकस किया ॥१७॥

कुंवर किशोरी सिंह ने श्री जी को रसोई देने का निमन्त्रण भिजवा दिया । उसने मन में यह दृढ़ निश्चय किया कि हम श्री जी को घर लाकर उनकी सेवा करें ।

उठ आया दीदार को, चरचा सुनी कान ।
दिल में बोहोत राजी भया, ज्यादा भया ईमान ॥१८॥

मन में ऐसा विचार कर वह श्री जी के दर्शन करने आया । यहां बैठ कर चर्चा सुनने लगा । परमधाम की अखंड ज्ञान की अनोखी चर्चा सुन कर बड़ा प्रसन्न हुआ और श्री जी पर विश्वास (यकीन) ले आया।

कोइक दिन पीछे, पधराऐ श्री राज ।
साथी सब संग चले, कहे धन धन दिन है आज ॥१९॥

कुछ दिनों के पश्चात श्री जी तथा सब सुन्दर साथ को बड़े सम्मान के साथ घर ले गया । ऐसी शुभ घड़ी पाकर किशोरी सिंह बोले "आज का दिन धन्य है । मेरा अहो भाग्य है कि श्री जी मेरे घर पधारे ।"

रसोई बनाई जुगत सों, बैठाए श्री राज ।
साथी गिरद घेर के, बैठे इनके काज ॥२०॥

बड़ी युक्ति और ऊंचे भाव के साथ रसोई बनाई गई । श्री जी के लिए उचित आसन लगा कर बैठाया गया । सब सुन्दरसाथ घेर कर बैठ गए और आनन्द मंगल के साथ रसोई का आनन्द लिया । इससे किशोरी सिंह की मनोकामना पूर्ण हो गई ।

Nijanand App

मेवा मिठाई पकवान, श्री राज आगे थाल धरी ।
साथ सबों को प्रीस के, सेवा भली करी ॥२१॥

अनेकों प्रकार के मेवा, मिठाई, पकवान परोस कर श्री जी के सामने थाल रखा । सब सुन्दर साथ को भी सब सामान परोस कर किशोरी सिंह ने अच्छी तरह सेवा की ।

भाव दिखाया भली भांत सों, हुआ सेवा को सनमुख ।
अंकूर माफक अपने, इन भी लिया सुख ॥२२॥

बहुत सुन्दर भाव दिखा कर सेवा के काम में मग्न रहा । जितना उसका अंकूर था । उसने उतना ही सुख लिया ।

एक दासी उनकी आवती, फेर वह ल्याई ईमान ।
देख दीदार हक का, कछुक भई पहिचान ॥२३॥

किशोरी सिंह जी की एक दासी, श्री जी के चरणों में आती थी । उसने श्री जी के स्वरूप की पहचान कर ली थी कि यही मेरे धाम धनी हैं ।

नित आवे दीदार को, कछुक सामा ल्याए ।
मुजरा कर पीछे फिरे, ताको दई पहुंचाए ॥२४॥

श्री जी के दर्शन के लिए जब भी आती थी, कुछ न कुछ लेकर आती थी और दर्शन करके वापिस चली जाती थी ।

आसाराम आइया, था कबीर पंथ में ।
चरचा को आवे नित, सुनता ईमान से ॥२५॥

कबीरपंथी आसाराम ने बड़े ईमान के साथ चर्चा सुनकर श्री जी की पहचान की और सुन्दर साथ में शामिल हुआ ।

एक उच्छव इन किया, दिल में होए खुसाल ।
मैं तुमारे कदमों रहो, मुझे बकसो ए हाल ॥२६॥

मन में अति प्रसन्न होकर उसने श्री जी एवं सुन्दर साथ को घर ले जाकर रसोई उच्छव किया और कहा- हे धाम के धनी ! मुझे आपके ही चरणों की आस है । मुझे अपने कदमों से जुदा मत करना ।

Nijanand App

इन समें दज्जाल, जोरा लगा करनें ।
आजूज माजूज उतरे, साथी लगे खेंचनें ॥२७॥

इस समय दज्जाल अबलीस ने मिर्गी की बीमारी का रूप धारण कर अपना खूब बल दिखाया । आजूज माजूज साक्षात काल रूप में प्रकट हुए और इस बीमारी के कारण अपने कई सुन्दर साथ का भी धाम गमन हो गया ।

राम नगर में हुआ, साथियों का चलना ।
सुनियों नाम तिनके, जिन सोंप्या अपना ॥२८॥

रामनगर में आकर इस महामारी के कारण कई सुन्दर साथ का धाम गमन हो गया । उनके नामों का जिक्र करते हैं । इन साथियों ने श्री राजजी महाराज के चरणों पर तन, मन, धन सौंप दिया था ।

ईस्वरदास उदयपुर का, ले चला कबीला संग ।
इन सौंपी आतम अपनी, पहुंचा संग कर जंग ॥२९॥

उदयपुर के रहने वाले ईश्वरदास अपने परिवार सहित स्वामी जी के चरणों में समर्पित हुए । इनका धाम गमन हो गया ।

तूंगा बेटा उनका, था लड़का छोटा ।
भोम लिया अपना, आए धनी की ओटा ॥३०॥

ईश्वर दास भाई का छोटा बेटा इस बिमारी की लपेट में आ गया । वह भी राज जी के चरणों में पहुंच गया ।

और धनियानी रूकमा, रही कोईक दिन ।
पीछे अपने अंकूर पे, जाए मिली गोवरधन ॥३१॥

गोवर्धन भाई की पत्नी रूकमा अपने पति के धाम गमन के बाद कुछ दिनों के पश्चात् ही धाम धनी के चरणों में पहुंची ।

और कानजी रामी चलिया, आया सूरत सें ।
उन सौंपी आतम अपनी, रहूया छबीला बेटा इनमें ॥३२॥

कान जी और रामी भाई, जो सूरत के रहने वाले थे, इन्होंने भी शरीर त्याग दिया । इनका एक बेटा छबीला था । उसको यह बीमारी तो आई लेकिन बच गया ।

Nijanand App

सामल दास चलिया, जाको चिन्तामन नाम ।
था ठठे के साथ में, पोहोंचा अपने धाम ॥३३॥

सामल दास जिनका नाम चिन्तामणी था और वह ठट्ठे के रहने वाले थे । यहां तक सुख लेकर इसकी भी आत्म धाम धनी के चरणों में पहुंच गई ।

निरमल दास चलिया, था महाजरों मिनें ।
आया सूरत वतन से, सो पोहोंचा ठौर अपने ॥३४॥

निर्मल दास जी, सूरत के सुन्दरसाथ में से थे । यह धनी के चरणों में हर पल सेवा में खड़े रहते थे। इनकी भी आतम यहां धाम धनी के चरणों में पंहुच गई ।

दामोदर पाटन से, सौंपी अपनी आतम ।
रहया अंकूर माफक सोहोबत, याको कछु न भई कुंम ॥३५॥

दामोदर भाई ने पाटन में अपनी आतम श्री जी के चरणों में सौंपी थी । इनका ईमान कभी भी कम नहीं हुआ था । अंकूर माफक सुख ले कर शरीर त्याग दिया ।

संग रहया कोइक दिन, ए जो फकीर मासूम ।
सो चला इतहीं, ठौर पहुंचा इन कदम ॥३६॥

मासूम फकीर कुछ दिन सुन्दरसाथ के साथ रहा । वह भी रामनगर में आकर धामवासी हो गया । जहां उसका अंकूर था, पहुंच गया ।

मलूक चन्द चलिया, था रजपूत राठौर ।
इन लड़ाई करी दज्जाल सों, हक बिना न रखे और ॥३७॥

मलूकचन्द राठौर राजपूत थे । इनका भी यहां धाम गमन हो गया । उन्होंने भी कुटुम्ब, परिवार, कबीले को झूठा समझ कर छोड़ दिया और श्री जी के चरणों में समर्पित हुआ ।

जोरू जो गुलजीय की, हमों उसका नाम ।
ओ भी चली उन समें, छोड़ कार वेहेवार का काम ॥३८॥

गुलजी की धर्म पत्नी जिसका नाम हम्मो बेगम था, सांसारिक कार्य व्यवहार छोड़ कर वह भी अपने धाम पहुंची ।

मथुरी बुढ़ानपुर की, चली छोड़ कुटुम्ब परिवार ।
रही अंकूर माफक सोहोबत, पहुंची परवरदिगार ॥३९॥

मथुरी बाई बुढ़ानपुर से घर - परिवार छोड़ कर सुन्दरसाथ के साथ राम नगर तक आई । अपने अंकूर माफक सुख ले कर इसने भी शरीर त्याग दिया ।

Nijanand App

गरीब फकीर बुढ़ानपुर से, चला बेटा उनका ।
उन हिस्सा लिया अपना, जो सुख अंकूर में था ॥४०॥

बुढ़ानपुर से आने वाले एक गरीब फकीर के पुत्र का भी धामगमन हो गया । उसने भी अंकूर माफक सुख लिया ।

लाड़ कुंवर दिल्ली की, थी जोरू बनारसी ।
रही हुकम माफक, जाए अपने सुख रची ॥४१॥

बनारसी भाई की धर्मपत्नी लाड़ कुंवरी दिल्ली से आई थी । सदा श्री जी के चरणों में खड़ी रहती थी। अंकूर माफक सुख लेकर अपने अखंड सुख में जा मिली ।

मानबाई माता नन्द राम की, थी राज की सेवा में ।
सुख लिया ताले माफक, नन्दराम की सोहोबत से ॥४२॥

नन्दराम की माता मान बाई जो सदा श्री जी की सेवा में रहती थी । उसने अंकूर माफक सुख लिया और धनी के चरणों में पहुंच गई ।

स्याम बाई बेटी लालबाई की, गढ़े में छोड़या आकार ।
सुख लिया अंकूर माफक, फेर चली इन करार ॥४३॥

लालबाई की बेटी स्याम बाई ने गढ़े में अपना शरीर त्यागा । अपने अंकूर माफक सुन्दरसाथ में सुख लिया और उसकी आतम धाम धनी के चरणों में पहुंच गई ।

गोमा खेमदास की, राह मिने चली ।
रही अंकूर माफक सोहोबत, जाए अपने ठौर मिली ॥४४॥

खेमदास की माता गोमाबाई रास्ते में ही धाम सिधार गई । अपने अंकूर माफक श्री जी के चरणों में रह कर सुख लिया और शरीर छोड़ दिया ।

सदानन्द त्रिलोकदास, उदयपुर से आए रहे ।
सोहोबत सेवा मिने, ठौर अपने पोहोंचे ए ॥४५॥

सदानन्द और त्रिलोकदास उदयपुर से आकर सुन्दरसाथ में शामिल हुए । कुछ दिन श्री जी के चरणों का सुख लेकर उसकी भी आतम अपने धाम पहुंच गई ।

इन भांत दज्जाल ने, साथी लिए छिनाए ।
एक को मजल पहुंचावें, तोलों दूजो रहने न पाए ॥४६॥

कुछ दिनों तक महामारी का प्रकोप इसी प्रकार रहा । बहुत सारे सुन्दरसाथ का धामगमन हो गया। एक सुन्दरसाथ का श्री जी अंतिम संस्कार करके लौटते थे तो दूसरे का धामगमन हो जाता था ।

Nijanand App

कोइक दिन ऐसा रहूया, फेर दबा हुकम से ।
साथ सब दुदला भया, रहे विचार करने में ॥४७॥

कुछ दिनों तक महामारी का प्रकोप ऐसे ही रहा फिर जब श्री जी ने ऐसा देखा तो अपने हुकम से ही उसको समाप्त किया । इस घटना से सुन्दरसाथ बहुत उदास हो गए । अब उनको संसार में कुछ भी अच्छा नहीं लगता था ।

इन समें सुलतान का, हुआ हुकम पुरदलखान ।
रहे राम नगर एक वेंरागी, तिनकी तुम करियो पहिचान ॥४८॥

इसी समय बादशाह औरंगजेब ने अपने मध्य प्रदेश के सिपहसालार पुरदिल खान को आज्ञा दे कर कहा - ''रामनगर में कुछ वैरागी रहते हैं । तुम जा कर उनकी जांच पड़ताल करो'' ।

ए कौन हैं कहां से आए, हैं इनका मतलब कौन ।
इन सुन हुकम खिदर को, भेजा ऊपर मोमिन ॥४९॥

वो लोग कौन हैं ? कहां से आए हैं ? करते क्या हैं और किस उद्देश्य को लेकर घूम रहे हैं ? यह सुन पुरदिलखान ने सुन्दरसाथ की जानकारी लेने के लिए शेख खिदर को आज्ञा दे कर भेजा ।

आया अहदी होए के, करता बड़ा सोर ।
गढ़े से पुकारिया, किया राजा ऊपर जोर ॥५०॥

बादशाह के प्रतिनिधि के रूप में सन्देशा लेकर शेख खिदर शोर करता हुआ आगे बढ़ा । गढ़े से ही अपने आदमी भेज कर रामनगर के राजा को धमकी दी ।

मैं आया फकीरों पर, पकड़ देओ मेरे हाथ ।
ना तो मुहिम तुम पर, ए चलें मेरे साथ ॥५१॥

शेख खिदर ने राजा को कहलवाया कि मैं वैरागियों को लेने आया हूं । आप उन्हें पकड़ कर मुझे सौंप दो, नहीं तो बादशाह ने तुम्हारे ऊपर चढ़ाई करने की आज्ञा दी है । वैरागियों को पकड़ दो । इनको मैं अपने साथ ले जाऊंगा ।

हुकम पातसाह के, हम आए तुम पर ।
जो ढील करो इन बात में, तो होत गुनाह तुम पर ॥५२॥

हम बादशाह की आज्ञा से आपके यहां आए हैं । अगर इस काम को करने में तुमने देरी की तो आप दोषी ठहराए जायेंगे ।

Nijanand App

ए बात राजा सुनके, भेज दिया कोतवाल ।
तुम कहो जाए स्वामी कृष्णदास सों, ऐसा हुआ हवाल ॥५३॥

शेख खिदर का हुक्म सुन कर राजा ने कोतवाल को भेजा कि आप स्वामी श्री कृष्ण दास जी (श्री जी) से कहो कि हमें ऐसी मजबूरी हो गई है । जिसकी सब जानकारी आपको है ।

एक चार दिन तुम इहाँ से, बैठो जाए जागा और ।
फेर के तुम आइयो, बैठियो अपनें ठौर ॥५४॥

केवल कुछ दिनों के लिए आप यहां से और जगह चले जायें । कुछ दिन वहां रह कर फिर वापिस रामनगर आ जाना और जब तक चाहो यहीं रहना ।

पर पातसाही दबदबा, सहे न सकें हम ।
एक लाठी आवे उनकी, सो फेर न सकें हुकम ॥५५॥

हम औरंगजेब बादशाह के हुकम को टाल नहीं सकते और न ही उसका दबाव सहन कर सकते हैं। उनके एक सिपाही के हुकम लेकर आ जाने पर हम उनकी आज्ञा को टाल नहीं सकते ।

ताको श्री जी साहिब जी ने, झुक के दिया जवाब ।
हम न डरें पातसाह से, आवे क्यों न सिताब ॥५६॥

कोतवाल को नम्रता पूर्वक स्वामी जी ने उत्तर दिया हम बादशाह से नहीं डरते । हमें पकड़ने के लिए वह जल्दी क्यों नहीं आ जाता ?

हम तो राह देखत हैं, क्यों ए कर बोलावे हम ।
बैठे रहो घर अपने, जिन उपराला करो तुम ॥५७॥

हम तो बादशाह के आने की इन्तजार कर रहे हैं । हम तो चाहते हैं वो किसी तरह अपने पास बुला लें । आप राजा से जाकर कह दो कि आप लोग अपने घर शान्ति से बैठे रहो और मेरी मदद भी नहीं करना ।

तब कोतवाल जाए के, करी राजा सों अरज ।
बैरागी तो यों कहें, हम ना डरें इन गरज ॥५८॥

तब कोतवाल ने राजा को नम्रता पूर्वक जाकर कहा कि यह बैरागी कहते हैं कि हमें बादशाह औरंगजेब द्वारा पकड़े जाने का जरा भी डर नहीं है ।

Nijanand App

आवन देओ उनको, हम समझेंगे उनसे ।
तुम हमारे उपराले, ना रहियो मदत में ॥५९॥

बादशाह या उसके सेनापतियों को आने दीजिए । हम स्वयं ही उनसे निपट लेंगे । आप इस बारे में हमारी मदद न करें ।

तब राजा ने फेर पठवाया, तुम जाए कहो यों कर ।
हम तुम सों कहत हैं, अरज दूसरी बेर ॥६०॥

श्री जी के इन विचारों को सुनकर राजा ने कोतवाल को भेज कर इस प्रकार फिर कहलवाया । हम दूसरी बार आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप कुछ दिन के लिए किसी और स्थान पर जाने की कृपा करें।

हम अपने धरम को, इसी वास्ते डरात ।
पकड़ ले आवें तुमको, तो सरम हमारी जात ॥६१॥

हमें इस बात का डर है कि हम अपने ही राज में आपकी मदद करने का धर्म पालन नहीं कर सकते। जब आपको बादशाह के लोग पकड़ कर ले जायेंगे तो हमारी इज्जत को धब्बा लगेगा । हमारी इज्जत नहीं रह पायेगी ।

तुम दस बीस कोस, छिप के बैठो जाए ।
फेर के इत आइयो, हम लेवेंगे बोलाए ॥६२॥

इसलिए दस-बीस कोस की दूरी पर छिप कर रह कर आप दोबारा आ जाइयेगा । हम आपको निश्चित ही बुला लेंगे ।

फेर के कोतवाल नें, आए करी अरज ।
राजा यों कहत हैं, अपने स्वारथ गरज ॥६३॥

राजा की आज्ञा से कोतवाल दुबारा श्री जी के पास आया । उसने प्रार्थना करते हुए कहा कि राजा ने यह विनती अपने स्वार्थ के लिए की है ।

तब जवाब दिया श्री जी ऐं, तुम कछू न करो फिकर ।
हम समझ लेएंगे इनको, आवने देओ हमारी नजर ॥६४॥

तब श्री जी ने उत्तर दिया आप लोग जरा भी फिक्र न करो । औरंगजेब को हमारी नजर के सामने आने दो । हम स्वयं ही उनसे निपट लेंगे ।

Nijanand App

कछू न चले इनका, जोरा हम ऊपर ।
देखत ही गल जायेंगे, बानी सुन पटन्तर ॥६५॥

वह लोग हमारा कुछ भी बिगाड़ नहीं सकेंगे । हमारी अखंड परमधाम की चर्चा को सुनकर, वाणी के रहस्यों को समझ कर स्वयं ही चरणों में झुक जायेंगे ।

जिन तुम अपने दिल में, ल्याओ दग दगा कोए ।
ए आसान होएगा, आज्ञा से जेर होए ॥६६॥

राजा साहब से कहिए कि आप किसी बात की फिक्र या चिन्ता मन में न आने दें । पारब्रह्म, अक्षरातीत, श्री राजजी महाराज की आज्ञा से हमें पकड़ने के लिए आने वाले बादशाह या उनकी सेना के आदमी स्वयं ही झुक जायेंगे । यह काम आसानी से हो जायेगा ।

फेर गया कोतवाल राजा पे, सब कही बीतक ।
राजा सुन अचरज भया, इन्हें कछू न आवे सक ॥६७॥

कोतवाल फिर वापिस राजा के पास पहुंचा । श्री प्राणनाथ जी की सब बातों का हवाला दिया । राजा को सुन कर हैरानी हुई कि इनको बादशाह के गलत व्यवहार से कुछ भी डर नहीं लगता ।

जाए सुवंसराए तुम कहो, क्यों डरत नहीं तुम ।
पातसाही लोकन से, पीछे क्या करेंगे हम ॥६८॥

तब राजा ने सुवंशराए को भेज कर पुछवाया कि तुम बादशाह की धमकी को सुनकर डरते क्यों नहीं? जब वह लोग आपको पकड़ कर ले जायेंगे तो हम लोग क्या करेंगे ?

जब तुम को पकड़ के, ले जाएं हजूर सुलतान ।
तब हमारे दिल में, होए बदनामी सुने कान ॥६९॥

जब सेनापति आपको बादशाह के पास ले जायेंगे तो हमें अपने कानों से ही अपनी बुराई सुननी पड़ेगी। हमारी बदनामी होगी । उससे हमें बड़ा कष्ट होगा ।

सुवंसराए सुन आइया, कही श्री जी साहिब जी से बात ।
राजा को कहलाई थी, ताकी करी विख्यात ॥७०॥

सुवंशराए राजा का निर्देश सुनकर श्री जी के पास आया । उसने राजा की कही सब बातें श्री जी को बतलाई । जैसा राजा ने कहा था वैसा श्री जी को साफ कह दिया ।

Nijanand App

तब श्री जी साहिब जी ऐं कहूया, जिन डरो मन में ।
अपना बल दिखाइया, कर चरचा उन से ॥७१॥

तब आप श्री जी ने कहा राजा और तुम डरो मत । अपनी आत्म शक्ति का बल दिखाते हुए श्री जी ने कहा कि बादशाह का सन्देश लाने वालों से चर्चा करेंगे और वह हमारा कुछ न बिगाड़ सकेंगे ।

उन जाए कही राजा सों, काहे को कहो तुम ।
बिना मार अपनी, सब डर बताया हम ॥७२॥

सुवंशराए ने राजा से लौट कर कहा कि आप बेकार ही उनको बार-बार कह रहे हो । केवल एक मार पीट के बिना हमने उनको सब डर दिखा कर अपना फर्ज पूरा कर दिया ।

जहां लग अपना कहना, सो कह के चुके सब ।
अब इनके दिल में जो आवे, सो करेंगे तब ॥७३॥

जहां तक हमको उनसे कहना चाहिए था । सब कुछ कह ही दिया है । अब जैसा उनके मन में आयेगा समय आने पर वह स्वयं ही वैसा कर लेंगे ।

यों करते दिन दूसरे, शेख खिदर पहुंचे धाए ।
मुलाकात राजा सों करी, पहिले एही बताए ॥७४॥

इस प्रकार ऐसा करते-करते दूसरे दिन ही शेख खिदर भागता हुआ चला आया । राजा से मिल कर उसने कहा हमने आने से पहले ही कार्य की सूचना आपको दे दी थी । उसके अनुसार आये हैं ।

हम आए तिन काम को, पकड़ देओ बेंरागी तुम ।
हजूर में ले जाएंगे, हमको है हुकम ॥७५॥

हम इसी काम के लिए आए हैं कि आपके राज्य में ठहरे वैरागियों को पकड़ कर हमें दे दो । हम पकड़ कर बादशाह के पास ले जायेंगे । हमें ऐसी आज्ञा मिली है ।

जो तुम इनकी रक्षा करो, तो है मुहिम तुम पर ।
केतो इनें पकड़ देओ, नातो बाँधो कमर ॥७६॥

यदि आप उन वैरागियों की मदद करेंगे तो आप इस मुहीम को अपने राज्य पर हमला समझ लें । आप या तो वैरागियों को पकड़ कर दे दो नहीं तो लड़ने के लिए तैयार हो जाओ ।

तब राजा बोलिया, हम सों न कछू काम ।
तुम जाए पकड़ो उनको, ले जाओ अपने ठाम ॥७७॥

तब राजा ने कहा कि आपका हमसे तो कोई काम ही नहीं है । आप स्वयं जा कर उन वैरागियों को पकड़ लीजिए और जैसे चाहे उनको घर ले जाइए ।

Nijanand App

जो तुम आए हम पर, ले सुलतान हुकम ।
सो हम चढ़ाया सिर पर, ले जाओ बेंरागी तुम ॥७८॥

आप बादशाह का हुकम लेकर हमारे पास आए हैं । हमने उसको सिर चढ़ा कर मान लिया । आप हमारी ओर से जब चाहे वैरागियों को पकड़ कर ले जाइए ।

उहाँ से फेर उठके, आए उतरे हवेली में ।
भिखारी दास दीवान, बात करी उन सें ॥७९॥

शेख खिदर राजा के पास से उठ कर हवेली में आए । जहां उन लोगों के ठहरने का प्रबन्ध था । वहीं शेख खिदर ने दीवान भिखारीदास से वैरागियों को पकड़ने की बात पर विचार किया ।

अब हमें क्या करना, क्यों कर पकड़े हम ।
तब भिखारी दासें कहया, पहले हमें पठाओ तुम ॥८०॥

शेख खिदर बोला अब हमें उन्हें पकड़ने के लिए क्या करना चाहिए । उन्हें कैसे पकड़ा जाए । तब भिखारी दास ने कहा आप पहले मुझे वहां जाने दो ।

खबर ले उनकी, क्या है उनकी बात ।
वाकिफ उनके होए के, पकड़ लेएंगे जात ॥८१॥

हम उन वैरागियों की पूरी जानकारी ले आएं । तभी उन की हकीकत का पता लग सकेगा । उनकी शक्ति जान कर पकड़ने में आसानी होगी ।

भिखारीदास बिदा होए के, आए हादी कदम ।
कदमों लाग सेजदा किया, हम आए ऊपर तुम ॥८२॥

वहां से चल कर भिखारीदास केतकी नदी के किनारे स्वामी जी के चरणों में आए । चरणों में प्रणाम करके कहा - ''हम आपको पकड़ने के लिए आए हैं ।''

क्या तुमारी खबर है, आया पातसाही फुरमान ।
हम आए तुमें पकड़ने, ले जाएं पास सुलतान ॥८३॥

अब आपका क्या विचार है ? राजा के पास आपके विरूद्ध ही बादशाह का सन्देश आया है । इसलिए हम आपको पकड़ने आए हैं और पकड़ कर हम आपको बादशाह के पास ले जाएंगे ।

तब हादी ने कहया, हमको तो एही चाह ।
जो हमको ए याद करें, कोई हमको उत पहुंचाए ॥८४॥

तब श्री प्राणनाथ जी ने कहा कि हम तो चाहते ही यही हैं कि किसी प्रकार औरंगजेब हमको याद करे और कोई हमें उनके पास तक पहुंचा दे ।

Nijanand App

तुम लेओ हमारी खबर, वाकिफ होवो हकीकत ।
सुनावें चरचा तुमको, सब समझो तुम इत ॥८५॥

तब श्री जी ने कहा कि आप हमारी अच्छी तरह जानकारी लीजिए और हमारी हकीकत की पहचान कीजिए । हम आपको चर्चा सुनाएं तो आप हमारी हकीकत को जान जायेंगे ।

कही हकीकत उनको, बात मूल की सब ।
सवाल भागवत कुरान के, मिलाए दिखाए तब ॥८६॥

तब आप श्री जी ने संसार की उत्पत्ति से लेकर आज तक की पूरी हकीकत भिखारी दास को बताई। कुरान और भागवत के छिपे भेदों को खोल कर दोनों को मिला कर दिखा दिया ।

जवाब करो तुम इनका, जो तुमे समझी जाए ।
यातो सुनो हम पे, सब देवें बताए ॥८७॥

तब स्वामी जी ने भिखारी दास से कहा - यदि आपकी समझ में यह ज्ञान आ गया तो आप इन प्रश्नों का उत्तर दीजिए । नहीं तो हम आपको बताएंगे और आप ध्यान से सुनना ।

तब भिखारी दासें कहया, हमें समझाओ तुम ।
हम तो ल्याए ईमान, तुमारे कदम न छोड़ें हम ॥८८॥

तब भिखारी दास ने कहा आप ही हमें समझाने की कृपा करें । आपके स्वरूप की पहचान कर हमें आपके प्रति विश्वास हो गया है । अब मैं कभी भी आपके चरणों का सहारा नही छोडूंगा ।

तीन रात और तीन दिन, कहया तारतम समझाए ।
सवाल कुरान भागवत के, सब ठौर दिए बताए ॥८९॥

तीन दिन व तीन रात भिखारी दास को श्री जी ने भागवत और कुरान से समझाया और इनके सब भेदों को खोल कर बता दिया ।

विरोध सारा भान के, बताया एक दीन ।
मारा सक सैतान को, तबही ल्याया आकीन ॥९०॥

सारे संसार में धर्मों का विरोध मिटा कर एक ही धर्म दीने-इस्लाम निजानन्द सम्प्रदाय समझा दिया। भिखारी दास के मन की सब भ्रान्तियां यह चर्चा सुन कर दूर हो गई और श्री प्राणनाथ जी के चरणों पर भिखारी दास को पक्का यकीन आ गया ।

Nijanand App

गया सेख खिदर पे, कही हकीकत सब ।
मैं देख्या हादी जमाने का, सेंख खिदरें पूछया तब ॥९१॥

भिखारी दास शेख खिदर के पास गया और सारी हकीकत की जानकारी उसको दी । हमने तो आखिरी जमाने के खाविंद साहिब आखरूल जमां के रूप में उन्हें पहचान लिया है । तब शेख खिदर ने पूछा ।

ए कैसी बात तुम कही, तुमें क्यों कर भई पहिचान ।
सो मेरे आगे कहो, हादी आवने के निसान ॥९२॥

आप यह बात कैसी कह रहे हो और आपको उनके इस स्वरूप की पहचान कैसे हुई ? आप मेरे सामने सब बात जाहिर करो और ईमाम मेंहदी साहिब के आने तथा कयामत के जाहिर होने के सब निशान समझाओ।

तब सवाल कहे कुरान के, और भागवत के प्रस्न ।
इनको खोल के, कर दिया दिल रोसन ॥९३॥

तब भिखारी दास ने शेख खिदर के सामने कुरान शरीफ और भागवत के प्रश्न रखे और फिर खुद ही उनको समझा दिया । यह सब हकीकत का ज्ञान सुनने के बाद शेख खिदर के दिल में यकीन आ गया और श्री जी पर ईमान ले आया ।

या सातों निसान क्यामत के, करी तिनकी चरचा जोर ।
एक दाभतल अरज, और दिखाया दज्जाल का सोर ॥९४॥

कयामत के जाहिर होने के वक्त के सातों निशानों के बातूनी अर्थ भिखारी दास ने शेख खिदर को अच्छी तरह समझाए । उसको दाभतूल-अर्ज जानवर और दज्जाल की लड़ाई के बारे में भी सब बताया।

और आजूज माजूज, आए ईसा हजरत ।
असराफीलें सूर फूंकिया, सब बताए दिए इत ॥९५॥

आजूज-माजूज काल चक्र का अर्थ बताया । श्यामा महारानी ईसा-रूह अल्लाह दसवीं सदी में जाहिर होंगे और दो जामों में काम करेंगे । दूसरा तन ईमाम मेंहदी साहब का होगा । अक्षर की बुद्धि के द्वारा तारतम ज्ञान का सूर फूंका जा रहा है ।

सूरज ऊगा मगरब, जाहिर हुए इमाम ।
ऐसे माएने खोल के, बताए दिए तमाम ॥९६॥

पश्चिम से बिना रोशनी के सूर्य ईमाम मेंहदी श्री प्राणनाथ जी के रूप में अवतरण हुआ है । इस तरह अनेकों भेद खोलकर भिखारी दास ने शेख खिदर को समझाए ।

Nijanand App

हुआ एक दीन सबमें, भानी सारी सक ।
राह सरातल मुस्तकीम, दिखाई मारफत हक ॥९७॥

और बताया कि ईमाम मेंहदी श्री प्राणनाथ जी ने सब धर्मों के झूटे झगड़ों को मिटाकर एक ही सत्य धर्म निजानन्द सम्प्रदाय स्थापित कर दिया है । पारब्रह्म अल्लाह तआला की पहचान करके उन्हें पाने का सरल और सीधा मार्ग फक्त (केवल) एक दीने इसलाम निजानन्द सम्प्रदाय ही है । जिसके ज्ञान के द्वारा ही अर्शे अजीम में पहुंचा जा सकता है ।

हकीकत मारफत के, खोल दिये सब द्वार ।
तब सेख की सुध गई, करने लगा विचार ॥९८॥

हकीकत और मारफत, जिसके द्वारा ही पारब्रह्म की पूरी पहचान होती है । उसके सारे रहस्यों को जब भिखारी दास ने समझा दिया तो शेख खिदर की सुध बुध गुम गई और वह विचार मग्न हो गया ।

सैयद अब्दुल रेहेमान, और रघुनाथ था संग ।
तिन साहिदी सब दई, भागा दज्जाल का जंग ॥९९॥

सैयद अब्दुल रहमान और रघुनाथ दोनों भिखारी दास के साथ ही थे । उन दोनों ने भी भिखारी दास के द्वारा सुनाई चर्चा का समर्थन किया । तब शेख खिदर के अन्दर बेईमानी खत्म हो गई और किसी शक की गुन्जाइश नहीं रही ।

तुम चलो उतहीं, करावें दीदार ।
जो देखो हकीकत उनकी, तो पाओ परवरदिगार ॥१००॥

भिखारी दास ने शेख खिदर से कहा आप मेरे साथ वहीं चलिए । जो कुछ मैंने आपसे कहा है, आप अपनी आंखों से देख लीजिए । हम आपको उनके दर्शन कराएंगे । यदि आप उनके ज्ञान की हकीकत को समझ गए तब उनको असल स्वरूप ईमाम मेंहदी श्री प्राणनाथ जी के रूप में पहचान कर अखण्ड सुख पाओगे ।

सेख वैसे ही उठिया, असवारी करी तैयार ।
आगे तें खबर करी, हम आवत करन दीदार ॥१०१॥

शेख खिदर तुरन्त उठकर खड़ा हो गया । सवारी तैयार करवाई । जाने से पूर्व स्वामी जी के पास सूचना भिजवाई कि हम आपके दर्शन करने के लिए आ रहे हैं ।

सेख आए के पहुंचिया, ले भीर अपनी ।
देख दीदार कदमों लगा, पाए अपनी वतनी ॥१०२॥

शेख खिदर पूरी फौज लेकर श्री जी के चरणों में आया । श्री जी के चरणों में प्रणाम किया । श्री जी ने उसको पहचाना कि ये अपनी परमधाम की आतम है ।

Nijanand App

होने लगी चरचा, कयामत का मजकूर ।
सनंधे सुनी तिनने, सब देखा हक जहूर ॥१०३॥

कयामत के सात निशानों पर चर्चा होने लगी । जब उसने ईमाम मेहंदी साहिब के आने की सनंध को सुना तो श्री जी को असल स्वरूप हकी सूरत ईमाम मेंहदी साहिब के रूप में पहचाना ।

इन समें दज्जाल नें, किया बड़ा सोर ।
रहत मुसलमान बेदड़े, तिनों किया अति जोर ॥१०४॥

इसी समय दज्जाल, अबलीस ने बेदड़े गांव के लोगों के अंदर बैठकर नाहक झंझट पैदा कर दिया और वह बड़े जोर-शोर से श्री जी की निंदा करने लगे ।

उनों जान्या सेख पुकारता, आया पकड़ने को ।
तो हम जावें मदत, होवे काम दीन के मों ॥१०५॥

उन्होंने समझा था कि शेख खिदर वैरागियों को पकड़ने के लिए आया है इसलिए हमको भी उसकी सहायता करनी चाहिए । वैरागियों को पकड़वाकर हमें इसलाम धर्म की सेवा का सवाब (यश) मिल जाएगा।

उहां कुरान तपसीर धरी थी, करने लगा जिद्द ।
ए हिन्दुओं को रवा नहीं, तुम क्यों चरचा करो महम्मद ॥१०६॥

स्वामी जी के निकट ही कुरान शरीफ रेहलों पर रखी थी । उसको देखकर मुसलमानों का अगुआ रहमत खां विवाद करने लगा । उसने कहा कुरान पढ़ने का अधिकार मुसलमानों को है, हिन्दुओं को नहीं है । मुहम्मद साहब की चर्चा आप क्यों करते हो ?

तब सेख को गुस्सा चढ़ा, इन्हें उठाए देओ मुडदक ।
देओ धक्के इनको, करने लगा हरकत हक ॥१०७॥

ऐसी बात सुनकर शेख खिदर को क्रोध आ गया । ऐसे मुरदार लोगों को धक्का देकर निकालो । बेइज्जत करके दूर भगा दो । ये अल्लाह तआला की राह में रूकावट डालता है ।

सबों ने दई लानत, उठाया मजलस सें ।
स्याह मोंह ले उठिया, बैठा दज्जाल इन में ॥१०८॥

शेख खिदर के साथियों ने बेदड़े के मुसलमानों को धिक्कारा और उन्हें सभा से उठा दिया गया । तब ये बेदड़े के मुसलमान जिनके मन में शैतान बैठा था, शर्मिन्दा होकर अपना मुंह सिर नीचा करके भाग गए ।

Nijanand App

सेख सब साथ सों, ले आया ईमान ।
फेर आया डेरे को, करके पूरी पहिचान ॥१०९॥

शेख खिदर अपने सभी साथियों सहित श्री जी से तारतम वाणी का ज्ञान सुनकर हकीकी दीने इसलाम निजानन्द सम्प्रदाय में समर्पित हुए । श्री जी के स्वरूप में ईमाम मेंहदी साहिब को पहचानकर शेख खिदर वापिस आ गया ।

दिन दूसरे गया, राजा की सोहोबत ।
हैफ हे राजा तुझको, ऐसा पहलवान रहे इत ॥११०॥

दूसरे दिन शेख खिदर रामनगर के राजा के पास गया और कहा हे राजा ! लानत है ! तुझे धिक्कार है कि तुम आज दिन तक श्री प्राणनाथ जी के चरणों में चर्चा सुनने नहीं गए । आपके राज में सर्वशक्तिमान साक्षात् पारब्रह्म रहते हैं । आपने उनके ज्ञान के बल को नहीं जाना ।

तूं तिनके दीदार को, गया नाहीं कब ।
तो मैं तुझको क्या कहों, तुझे पहिचान ना भई लों अब ॥१११॥

तुम उनके दर्शन करने भी आज दिन तक नहीं गये । तब आप को इस बारे में क्या कहूं । इससे स्पष्ट है कि तुम्हें आज दिन तक उनकी पहचान ही नहीं हुई ।

तब राजा बोलिया, अबहीं तुम करते पुकार ।
भली भई तुमहीं फिरे, तुमहीं करने लगे करार ॥११२॥

तब राजा ने शेख से कहा कुछ दिन पहले तो आप उनको पकड़ने के लिए चिल्लाते हुए आए थे । अच्छा हुआ, आपकी ही भावना बदल गई और आप खुद ही स्वामी जी को अल्लाह तआला के रूप में मानकर उनके बारे में हर प्रकार की पुष्टि करने लगे ।

तब सेख बोलिया, हमें ना कछू खबर ।
हम भेजे आए उनके, इन काम ऊपर ॥११३॥

तब शेख खिदर ने कहा हमें उनके बारे में कुछ भी जानकारी नहीं थी । हम बादशाह के भेजे हुए आए थे । उनको पकड़ कर ले जाने का काम हमारे जिम्मे लगाया गया था ।

जब हम देखा हादीए को, ए तहकीक बरहक ।
हमको भई पहिचान, हमारी सारी भानी सक ॥११४॥

जब हमने हादी श्री प्राणनाथ जी के चरणों में जा कर हकीकत और मारफत के भेदों की चर्चा सुनी तो हमें उनके असल स्वरूप की पहचान हो गई कि यही आखरूल जमां ईमाम मेंहदी हैं । हमारे दिल के सारे वहम दूर हो गए ।

Nijanand App

अब हम उनके गुलाम, जो हमको ए फुरमाए ।
सो सब हमें करना, दें पैगाम पहुंचाए ॥११५॥

अब तो हम हादी श्री प्राणनाथ जी के दास बन गए हैं । वह जो हुकम देंगे, हमें वही कुछ करना है। ईमाम मेंहदी के आने तथा कयामत के निशान जाहेर होने का पैगाम हम बादशाह तक भी पहुंचा देंगे।

तब लोगों ने कह्या, राजा सों सुकन ।
है इनके पास भुरकी, सो हाथ रहे मोमिन ॥११६॥

तब राजा के दरबार में रहने वाले पण्डितों व मित्रों ने राजा से कहा- ''इस वैरागी महाराज के पास भुरकी (तांत्रिक शक्ति की भस्म) है, जो उनके शिष्य मोमिनों के हाथ में रहती है'' ।

जो कोई जात है, सिर पर डारत तिनके ।
सोई उनका होत है, तुम समझियो सोहोबत में ॥११७॥

जो कोई भी स्वामी जी के पास जाता है तो बाकी वैरागी मौका देख कर उसके सिर पर भुरकी डाल देते हैं और फिर वह उनका हो जाता है। आप उनके सत्संग में सोच विचार कर जाना ।

राजा कहे मैं जाऊंगा, बैठों ना सोहोबत ।
दूर से दीदार करूंगा, वास्ते सेख खिदर के इत ॥११८॥

राजा ने कहा मैं वहां जाऊंगा पर मैं उनका सत्संग सुनने को नहीं बैठूंगा । दूर से ही उनके दर्शन करूंगा। यह दिखावा भी मुझे शेख खिदर के वास्ते ही करना है ।

दिन दूसरे राजा ने, न्योता किया सबन ।
बाग में आप आए के, दीदार किया मोमिन ॥११९॥

दूसरे ही दिन राजा ने श्री जी व सब सुन्दरसाथ की रसोई का निमंत्रण भेज दिया । सुन्दरसाथ सहित श्री प्राणनाथ जी को रसोई आरोगाई । जब सब सुन्दरसाथ और श्री जी आरोग रहे थे तब अपने बाग में आ कर खड़े हो कर ही दर्शन किए ।

हादी के सनमुख, खड़ा रहा ना बैठा जे ।
दिल में दहसत इनको, जिन अपने करें ए ॥१२०॥

रामनगर का राजा श्री जी के सामने आ कर खड़ा रहा, बैठा नहीं । उसके मन में यही डर था कि कहीं अपना ना बना लें ।

Nijanand App

ओ ऐसे ही पीछा फिरा, सुनी न चरचा कान ।
बिन अंकूरे क्या करे, कर ना सका पहिचान ॥१२१॥

वह दूर से ही श्री जी के दर्शन कर वापिस लौट गया और उसने अपने कान से चर्चा नहीं सुनी । परमधाम का अंकूर न होने के कारण से श्री जी की चर्चा नहीं सुन पाया । बिना परमधाम के अंकूर के वो कर भी क्या सकता था ।

फेर सेख खिदरें मांगिया, हमको करो हुकम ।
तैसा हम हजूर में, लिखा करें बाब तुम ॥१२२॥

फिर शेख खिदर ने श्री जी से कहा - ''हजूर ! मुझे जैसा हुकम करो। वैसा ही समाचार हम आपके बारे में बादशाह को लिख कर भेज दें'' ।

तब कहया हादी नें, तुमको क्या कहें हम ।
जैसा तुमारी अकलें, देखा होए हमें तुम ॥१२३॥

तब श्री जी ने कहा आपको इस विषय में हम क्या कह सकते हैं । आपने मेरे बारे में जो कुछ देखा हो वैसा ही अपनी अकल के अनुसार सोच समझकर लिख दो ।

तैसा तुम लिखा करो, पहुंचाओ पुरदल खान ।
वह भेजे सुलतान को, होए अंकूर पहिचान ॥१२४॥

और वैसा ही समाचार लिखकर पुरदिल खां के पास पहुंचा दो । वह स्वयं ही बादशाह के पास हमारी जानकारी भिजवा देगा । बादशाह में अगर परमधाम का अंकूर होगा तो अवश्य मेरे स्वरूप को पहचान लेगा ।

केतेक दिन सेख रहया, लिख भेजी पहिचान ।
केतेक लोग सेख के रह गए, जिनको जोर ईमान ॥१२५॥

कई दिन तक शेख खिदर अपनी फौज के साथ श्री जी के चरणों में ही रहा । उसने अपने फर्ज को पूरा करते हुए श्री जी की जानकारी के बारे में हकीकत लिख कर भेज दी । शेख खिदर के कुछ साथी, जिनको श्री जी के स्वरूप की पूरी पहचान हो गई थी तारतम ले कर सुन्दरसाथ में शामिल हो गए । शेख खिदर वहां से वापिस लौट गया ।

भिखारी दास सेख पहुंचाए के, फेर आए कदमों ।
कबीला अपना ल्याइया, सब सोंप्या हादी को ॥१२६॥

भिखारी दास शेख खिदर को पहुंचा कर वापिस श्री जी के चरणों में आ गए । उसने अपने परिवार को भी तारतम दिला कर सुन्दरसाथ में शामिल किया ।

Nijanand App

फेर अहदी गुलाम महम्मद, दौड़ा धमोनी से ।
तिनने सुनी बातें, वास्ते लोभ के ॥१२७॥

गुलाम मुहम्मद अब बादशाह का प्रतिनिधि बन कर धमोनी से दौड़ता हुआ श्री जी के पास आया। उसने सोचा शेख खिदर को मदद दे कर मुसलमानों में नाम कमाऊंगा और वैरागियों का धन माल भी मेरे हाथ लग जाएगा ।

था खेस पुरदल खान का, पुकार किया उत सें ।
राजा से जाए कहो, वेंरागी पकड़ देओ हमें ॥१२८॥

गुलाम मुहम्मद पुरदिल खां का खास रिश्तेदार था । उसने पुरदिल खां की तरफ से रामनगर के राजा को सख्त शब्दों में कहा कि वैरागियों को पकड़ कर हमारे हवाले कर दो ।

तब राजा डरिया, इन पर दबदबा पातसाही ।
इन्हें हम अपने गांव क्यों रखें, बदी बदकारों बताई ॥१२९॥

तब रामनगर का राजा भयभीत होकर विचार करने लगा कि इन वैरागियों पर औरंगजेब बादशाह का दबदबा है इसलिए हम ऐसे लोगों को अपने राज्य में क्यों रहने दें । इस पर उसके दरबारी लोग तथा और भी बुराई करने वाले लोगों ने राजा को और भी उकसा दिया ।

तब राजा ने भेजे, गुमास्ते अपनें ।
तुम जाओ हमारे देस से, हम न सह सकें खरखसे ॥१३०॥

राजा ने अपने एक दूत (कर्मचारी) को भेज कर श्री जी से कहा "कृपया आप हमारे राज्य से दूर चले जाइये। हम यह रोज के झंझट सहन नहीं कर सकते" ।

देखी नजर राजा की, दहसत भरी कहर ।
तब उहाँ से उठ चले, जिमी देखी जहर ॥१३१॥

राजा की डर से सहमी हुई आंखों में जहर भरी भावना देखकर श्री जी ने रामनगर छोड़ कर चलना निश्चित कर दिया । वह स्थान जहर के समान बुरा लगने लगा ।

सम्वत् सत्रह सै उन्तालीसे, मास अगहन सुदी दस में ।
चले रामनगर से, फेर आए चौदस गढ़े में ॥१३२॥

सम्वत् १७३९ (१६८२ ई०) में अगहन (मघसर) सुदी दसवीं के दिन श्री जी ने रामनगर से प्रस्थान किया और चौदस तिथि को सुन्दरसाथ को लेकर गढ़ा आ गए ।

Nijanand App

तब उतरे जाऐ बाग में, अहदी पहुंचा धाए ।
सो तो गया रामनगर, पाँच अपने पहुंचाए ॥१३३॥

जब रामनगर से चल कर एक बाग में ठहरे तभी बादशाह का उत्तराधिकारी (अहदी) गुलाम मुहम्मद दौड़ता हुआ आया । उसे पता चला कि बैरागी रामनगर से चले गए । फिर भी उसने अपने पांच सिपाहियों को श्री जी को पकड़ने के लिए भेज दिया ।

तिनने रोके बाग में, तब आए पहुंचे देवकरन ।
तिनसे बातें होने लगी, लड़े चार पहर मोमिन ॥१३४॥

उन सिपाहियों ने बाग में पहुंच कर वैरागियों को रोक लिया इतने में दीवान देवकरण वहां आ गए। उससे उनकी चर्चा होने लगी । उधर चार पहर तक सुन्दरसाथ उन सिपाहियों से लड़ते रहे और फिर पकड़ कर श्री जी के पास ले आये ।

सनंधे हादी ने कही, सुनते ही हुए जेर ।
दिन उगते पहिले भगे, बड़ी हुई हमें खेर ॥१३५॥

श्री जी ने उन पांच सिपाहियों को ईमाम मेंहदी साहिब के आने की और "एक महंमद की" सनंध से चर्चा सुनाई । वह सिपाही चर्चा सुन कर बड़े शर्मिन्दा हुए और उन्होंने लाख-लाख शुक्र बजाया । सूर्योदय से पहले ही वे लोग शर्मिन्दा होकर चले गए । यहां आने पर खुदा की खैर हम पर बरसी है । एक तो हम जिन्दा बच गए और दूसरा ईमाम मेंहदी साहब के आने का शुभ पैगाम मिल गया ।

एतो बली खुदाए का, हमसे बेअदबी कछु होए ।
तो होता बुरा हमारा, हम ठौर न पावें सोए ॥१३६॥

यह फकीर तो खुदा का वली है कहीं जाने अनजाने हमसे कोई गुस्ताखी हो जाती तो हमारा बुरा हाल होता । उससे हमें दोजख में जाना पड़ता ।

हादी वहां से चल के, गढ़े पहुंचे धाए ।
वहां भगवन्त राए का, बेटा हाकिम ताए ॥१३७॥

स्वामी जी सब सुन्दरसाथ सहित उस बाग से चलकर गढ़ा पहुंचे । वहां भगवन्त राय का बेटा रहता था । जो वहां का हाकिम था ।

उनने दिल में यों लिया, लूट लेऊं वेंरागिन ।
एही हराम खोरी के, लोकों आगे कहे सुकन ॥१३८॥

उसने इन वैरागियों को लूटने का मन में विचार कर लिया । अपने लोगों में उसने निर्लज्जता भरे विचार भर दिए ।

Nijanand App

ए सुनी गंगाराम बाजपेई, उहां था आसन ।
आया बार दोए दीदार को, जान सनमन्ध आपन ॥१३९॥

गंगाराम वाजपेई वहां का महंत था । वह अपनी आत्मा के कल्याण के भाव से श्री जी के दर्शन करने के लिए पहले भी दो-चार बार आया था । जब उसने यह बात सुनी, तब ।

तिन जाए बरज्या उनको, क्यों एह करने लगा काम ।
वेरागियों को लूटते, होएगा बदनाम ॥१४०॥

उसने उसको समझाया कि साधुओं के लुट जाने पर बड़ी बदनामी होगी जरा इस विषय पर विचार करो ।

और ए ऐसे नहीं जो कोई लूट ले, मरे मारेंगे तुम ।
काहे को भूल के सुकन, मुंह से काढ़ दिखाओ हम ॥१४१॥

तुम्हें इस बात की जानकारी ही नहीं है कि वह वैरागी ऐसे नहीं हैं कि कोई भी उन्हें लूट ले । उन्हें लूटना आसान नहीं है । वह अपनी रक्षा के लिए मर मिटेंगे या तुम्हें मार डालेंगे । भूल कर भी ऐसे अनुचित विचार मुंह से न निकालना ।

लागी लानत गढ़े को, उस दिन से हुआ खुवार ।
सो रोज कयामत लों, ठौर न आवे लगार ॥१४२॥

उस दिन से गढ़े को फिटकार लगी । वह नष्ट होता गया । महाप्रलय के समय तक गढ़े का उद्धार नहीं हो सकेगा ।

महामत कहे ऐ साथ जी, ए गढ़े की बीतक ।
कछुक पीछे रही है, सो कहों हुकम हक ॥१४३॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे सुन्दर साथ जी ! यह गढ़े का वृत्तान्त आपको सुनाया है । श्री राजजी के हुक्म से वह भी कहता हूं ।

(प्र० ५८, चौ० ३३००)

गढ़े की मजल में, आया याद रामनगर ।
तिनकी मजल कहत हों, सुनियो साथ खबर ॥१॥

धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे सुंदरसाथ जी ! अब गढ़े की बीतक कहते हुए राम नगर की बाकी बातें याद आ गई । उनका वर्णन करता हूं । सावधान हो कर सुनिए ।

Nijanand App